بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail :ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-19.05.2023 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

हज़रत अक़दस मसीह माऊद अलैहिस्सलाम की सत्यता तथा जमाअत की विश्व व्यापी प्रगतियों को प्रदर्शित करने वाली कुछ ईमान वर्धक घटनाओं का वर्णन

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 19 मई 2023, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللّٰہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, जमाअत पर अल्लाह तआला के फ़ज़्ल और उसके आगे बढ़ते चले जाने का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं- यह भी अल्लाह जल्ला शानुह का महान चमत्कार है कि बावजूद इतना अधिक झूठलाए जाने तथा इंकार और हमारे विरोधियों की दिन रात की कोशिश के यह जमाअत बढ़ती जाती है, जानते हो इसमें क्या भेद है? हिकमत इसमें यह है कि अल्लाह जल्ला शानुह जिसको नियुक्त करता है तथा जो वास्तव में ख़ुदा की ओर से होता है वह दिन प्रतिदिन उन्नति करता और बढ़ता है तथा उसका सिलसिला दिन प्रतिदिन रौनक़ पकड़ता जाता है। उसके विरोधी तथा झुठलाने वाले बड़ी निराशा के साथ मरते हैं। जिसको ख़ुदा बढ़ाना चाहता है उसको कोई रोक नहीं सकता, क्यूँकि यदि उनके प्रयासों से वह सिलसिला रुक जाए तो मानना पड़ेगा कि रोकने वाला, ख़ुदा पर ग़ालिब आ गया, जबकि ख़ुदा पर कोई ग़ालिब नहीं आ सकता।

आप अलै. की इन बातों के पूरा होने के दृश्य हम दिन प्रतिदिन देखते हैं। दुश्मन ने व्यक्तिगत रूप में भी तथा संगठित रूप में भी प्रयास किए किन्तु ख़ुदा तआला ने जो हुज़ूर अलैहिस्सलाम से वादा किया था कि मैं तेरी तबलीग़ को दुनिया के किनारों तक पहुंचाऊँगा तथा मैं तेरे निष्ठावान एवं दिल से प्रेमियों का गिरोह बढ़ाऊँगा, उस वादे के अनुसार हम जमाअत को फैलता देख रहे हैं। ये तथाकथित विद्ववान तथा विरोधी समझते हैं कि हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत को अपनी फूंकों से नष्ट कर देंगे परन्तु नहीं जानते कि वे अल्लाह तआला से मुक़ाबला कर रहे हैं तथा अल्लाह तआला के मुक़ाबले पर जब खड़े

हां तो अपना ही विनाश होता है और अल्लाह तआला अपने बन्दे की सहायता एवं समर्थन तथा सहयोग फ़रमाता है।

अल्लाह तआला के समर्थन एवं सहयोग तथा सहायता के दृश्य हम दुनिया के दूर सूदूर देशों में भी देखते हैं। ऐसे क्षेत्रों में जहाँ कई बार साधारण रूप में भी इंसान की पहुंच नहीं होती, अति कठिन रास्ते होते हैं किन्तु अल्लाह तआला वहाँ भी अपने समर्थन के दृश्य दिखा रहा है। विरोधी अपनी पूरी चेष्टा करते हैं परन्तु असफलता देखते हैं। जान तथा माल की हानि देकर जमाअत क लोगों को भयभीत करना चाहते हैं कुछ स्थानों पर, परन्तु ये बातें जमाअत के लोगों के ईमान में व्यापकता लाती हैं।

दुनिया में जो अल्लाह तआला के समर्थन की घटनाएँ होती हैं, जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से अल्लाह तआला के वादे ह ये किस तरह पूरे होते ह इनका समेटना तो सम्भव नहों, फिर भी मैं इस समय जमाअत की प्रगति के कुछ वृत्तांत बयान करूँगा। इन घटनाओं से पता चलता है कि किस तरह अल्लाह तआला हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सत्यता लोगों के दिलों में डाल रहा है।

कुछ लोग मूढ़ता के कारण विरोध करते हैं तथा जब उन्हें सत्यता का ज्ञान हो जाए तो सच्चाई को स्वीकार भी कर लेते हैं। ऐसी ही एक घटना कांगो कंशासा के अमीर साहब लिखते हैं कि वहाँ एक गाँव में हमारे मअल्लिम साहब की तबलीग़ के दौरान लोकल इमाम से मसीह के देहान्त इत्यादि के शीर्षकों पर बात चीत हुई। जब वे ग़ैर-अहमदी इमाम यह समझ गए कि मसीह के जीवन वाली आस्था में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अपमान एवं अनादर है तो उन्होंने तुरन्त सच्चाई को स्वीकार कर लिया, फिर इमाम मेहदी के प्रकट होने का मामला भी उनकी समझ में आ गया। अतएव वे अपने परिवार के छः लोगों तथा इक्कीस मुक़तदियों (पीछे नमाज़ पढ़ने वालों) के साथ अहमदिया जमाअत में दाख़िल हो गए।

कुछ स्थानों पर क़बूलियत के लिए ख़ुदा तआला स्वयं ज़मीन तय्यार करता है। गिनी कनाकरी के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि एक गाँव में तबलीग़ की तो उस गाँव के सबसे बुजुर्ग व्यक्ति ने कहा कि मैंने अपने दादा से यह शब्द ''मेहदी'' बहुत बार सुना था किन्तु इसका विवरण पता नहीं था, आज आपने इसको सविस्तार समझाया है अतः मैं अहमदियत क़बूल करता हूँ। फिर उन्होंने गाँव वालों से भी अहमदियत को स्वीकार करने का आग्रह किया जिसके परिणाम स्वरूप इमाम सहित अनेक लोगों ने बैअत की।

इसी प्रकार गैम्बिया के मुबल्लिग़ इंचार्ज लिखते हैं कि वहाँ एक गाँव में जब तबलीग़ करने वालों की एक टीम गई तो उन्होंने अन्य बातों के साथ बैअत की दस शर्तें भी पढ़कर सुनाईं। ये शर्तें सुन कर उस गाँव के बुद्धिमान लोगों की समझ में आ गया कि ये तो वास्तविक इस्लाम की बातें हैं। गाँव वालों ने माना कि हमने इस्लाम की यह सुन्दर शिक्षा पहली बार सुनी है अतः प्रश्नोत्तर की एक लम्बी गोष्ठि के बाद लगभग दो सौ लोग अहमदियत में शामिल हुए।

अफ़रीक़ा के एक देश में हमार मुबल्लिग़ साहब से हमारे कुछ लोगों ने सम्पर्क किया तथा कहा कि आप हमारे इलाक़े में तबलीग़ करें क्यूँकि हमें पता चला है कि आप लोग बच्चों के लिए क़ुर्आन करीम की शिक्षा का प्रबन्ध करते हैं। अतः अगले दिन हमारा प्रतिनिधि मंडल वहाँ पहुंचा तथा एक लम्बी तबलीग़ की

विचार गोष्ठि के परिणाम स्वरूप वहाँ एक बड़ी संख्या ने अहमदियत क़बूल की। इसके बाद गाँव वालों ने गाँव के सारे बच्चे लाकर हमारे सामने खड़े कर दिए कि ये जमाअत के बच्चे हैं और इनके लिए क़ुर्आन की शिक्षा का प्रबन्ध किया जाए। अतएव सिलसिले के मुबल्लिग़ ने दो बच्चों को चुना कि इन्हें क़ुर्आन करीम सिखाया जाएगा तथा ये वापस आकर अपने इलाक़े के अन्य बच्चों को क़ुर्आन करीम पढ़ाएंगे।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि पाकिस्तान में हमारे क़ुर्आन करीम पढ़ने तो क्या सुनने पर भी पाबन्दी लगाई जाती है। एक अहमदी पर इस लिए मुक़दमा क़ायम हो गया कि यह कुर्आन करीम क्यूँ सुन रहा था, एक अहमदी पर इस कारण से मुक़दमा हो गया कि वह क़र्आन करीम की तिलावत क्यूँ सुन रहा था। यह है उन तथाकथित मुसलमानों का इस्लाम, और दूसरी ओर लोग अपने बच्चों को जमाअत के हवाले कर रहे हैं कि इन्हें क़ुर्आन करीम पढ़ाएँ, सिखाएँ क्यूँकि जमाअत ही क़ुर्आन करीम का सटीक ज्ञान रखती है।

अफ़रीक़ा के देश चाऊ की राजधानी में हमारी पहली मस्जिद बनी तो द्वेष रखने वाले लोगों ने विरोध शुरु कर दिया। जमाअत के विरुद्ध वहाँ की इस्लामी कौनसल में शिकायत की, तो उन्होंने जवाब दिया कि इबादत करना अहमदियों का अधिकार है, हम उनकी मस्जिद को कैसे बन्द कर सकते हैं। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि वहाँ की इस्लामी कौनसल को कम से कम बुद्धि तो है तथा वह न्याय प्रिय है। पाकिस्तान में तो जज भी अहमदिया जमाअत के विरुद्ध द्वेष रखते हैं तथा अहमदियों को अपनी मस्जिदों में इबादत करने तथा अपनी इबादत गाहों को मस्जिद कहने की भी स्वतंत्रता नहीं।

अतएव इस्लामी कौनसल ने विरोधियों से कहा कि यदि आपको उपद्रव की आशंका है तो पुलिस को रिपोर्ट करें। पुलिस में रिपोर्ट की गई तो पुलिस ने पूरी छान बीन की, मस्जिद के निमाण का अनुमति पत्र और जमाअत के रजिस्ट्रेशन के काग़ज़ चैक किए, उस क्षेत्र के चीफ़ से जानकारी प्राप्त की, मस्जिद का दौरा किया तथा पुलिस इस नतीजे पर पहुंची कि अहमदिया जमाअत ने कोई नया दीन क़ायम नहीं किया और न ही नऊज़ु बिल्लाह आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का निरादर करते हैं।

अल्लाह तआला ने जिसको हिदायत देनी हो उसके लिए हिदायत की व्यवस्था भी आश्चर्य जनक रूप से करता है। साऊतोमे अफ़रीक़ा का एक क्षेत्र है, वहाँ के मुबल्लिग़ इंचार्ज साहब लिखते हैं कि साऊतोमे में एक सैलानी जो मराकश देश से आया था उसने वहाँ हमारी मस्जिद में संयोगवश जुम्अः की नमाज़ अदा की। वहाँ उसने 'सिर्रातुल ख़िलाफ़ः' और 'मज़हब के नाम पर ख़ून' अर्बी भाषा में पढ़ीं। एम टी ए अल-अर्बिय्यः के कुछ प्रोग्राम देख, विश्व व्यापी बैअत की रिकार्डिंग देखी, फिर कुछ अवधि के पश्चात वह दोबारा आया और बैअत का फ़ॉर्म मांगा तथा तुरन्त बैअत का फ़ॉर्म भर दिया। हमारे मुबल्लिग़ साहब ने कहा कि कुछ दिन सोच लो तथा दुआ कर लो, फिर बैअत कर लेना। परन्तु उसने कहा कि मैंने पूरी रात दुआएँ की हैं तथा यदि मैं इमाम की बैअत किए बिना मर गया तो मेरी मौत जहालत की मौत होगी, अतः उसने तुरन्त बैअत कर ली। हुज़ूर ने फ़रमाया- अब बावजूद इसके कि मराकश में अहमदी हैं, जमाअत है परन्तु उसे जमाअत का परिचय वहाँ नहीं हो सका। अल्लाह तआला ने उसे अफ़रीक़ा के एक अन्य देश में भेजा, दूर सुदूर क्षेत्र में और वहाँ जाके उसकी हिदायत के सामान पैदा फ़रमाए।

सैन्ट्रल अफ़रीक़ा में एक साहब ने जब जमाअत के विषय में जानकारी प्राप्त कर ली तथा बैअत फ़ॉर्म भरने लगे तो उनकी आँखों से आँसू जारी हो गए। पूछने पर कहने लगे कि मैंने जमाअत के विरोधियों से जमाअत के बारे में बहुत कुछ सुना है परन्तु यह बैअत फ़ॉर्म तथा इसकी दस शर्तों को पढ़ कर मुझे अपने पिछले जीवन से घिन आ रही है। इस बैअत फ़ॉर्म को पढ़ कर मैंने जान लिया कि अहमदिया जमाअत एक सच्ची और खरी जमाअत है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने आयवरी कोस्ट, बैलीज़, अज़बिकस्तान और गयाना इत्यादि देशों के कई ईमान वर्धक वृत्तांत पेश करने के बाद फ़रमाया कि मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ ख़ुदा तआला के वादे पूरे होने की ये कुछ घटनाएँ बयान की हैं, ऐसी अनेक घटनाएँ हैं। विरोधी अपनी अत्यंत चेष्टा कर रहे हैं परन्तु दूसरी ओर अल्लाह तआला दुनिया के हर एक देश में जमाअत की उन्नति के नए रास्ते खोल रहा है। अतएव इस बात पर जहाँ हमें अल्लाह तआला का आभारी होना चाहिए वहाँ अपनी स्थितियों का भी निरीक्षण करते रहना चाहिए, अपने ईमानों को सुदृढ़ बनाने का भी प्रयत्न करना चाहिए।

अपनी पीढ़ियों के दिलों में भी यह बात मज़बूती से जमानी चाहिए कि परीक्षाएँ तो आती हैं किन्तु अन्तिम सफलता अल्लाह तआला द्वारा स्थापित जमाअत की है इस लिए कभी अपने ईमानों को विचलित न होने दो। अल्लाह तआला नए आने वालों तथा पुराने सब अहमदियों के पगों को सुदृढ़ता प्रदान करे, ईमान एवं विश्वास में बढ़ाता चला जाए। आमीन

ख़ुत्बः के अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने 4 मृतकों का सद्वर्णन फ़रमाया तथा उनके जनाज़े की नमाज़ ग़ायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई- 1- परवीन अख़तर साहिबा पतनी ग़ुलाम क़ादिर साहब ऑफ़ सियालकोट, जो नव्वे वर्ष की आयु में सिधार गईं। इनके एक बेटे आरिफ़ महमूद साहब बेनिन के मुबल्लिग़ सिलसिला हैं जो मैदाने अमल में होने के कारण अपनी वालिदा के जनाज़े में शामिल नहीं हो सके। 2- मुमताज़ वसीम साहिबा पतनी चौधरी वसीम अहमद नासिर साहब ऑफ़ गुठियालियाँ, इनके दो बेटे हैं, एक बेटा ज़ैम्बिया में सिलसिले के मुबल्लिग़ हैं। 3- ब्रिगेडियर मुनव्वर अहमद राणा साहब जर्नल सैक्रेट्री ज़िला रावल पिंडी। 4- ग्रुप कैपटिन रिटायर्ड शकूर मलक साहब, पूर्व नायब अमीर जमाअत अहमदिया, रावल पिंडी। अल्लाह तआला मरहूमीन से मग़फ़िरत और रहम का सलूक फ़रमाए, आमीन।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131